कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 16-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

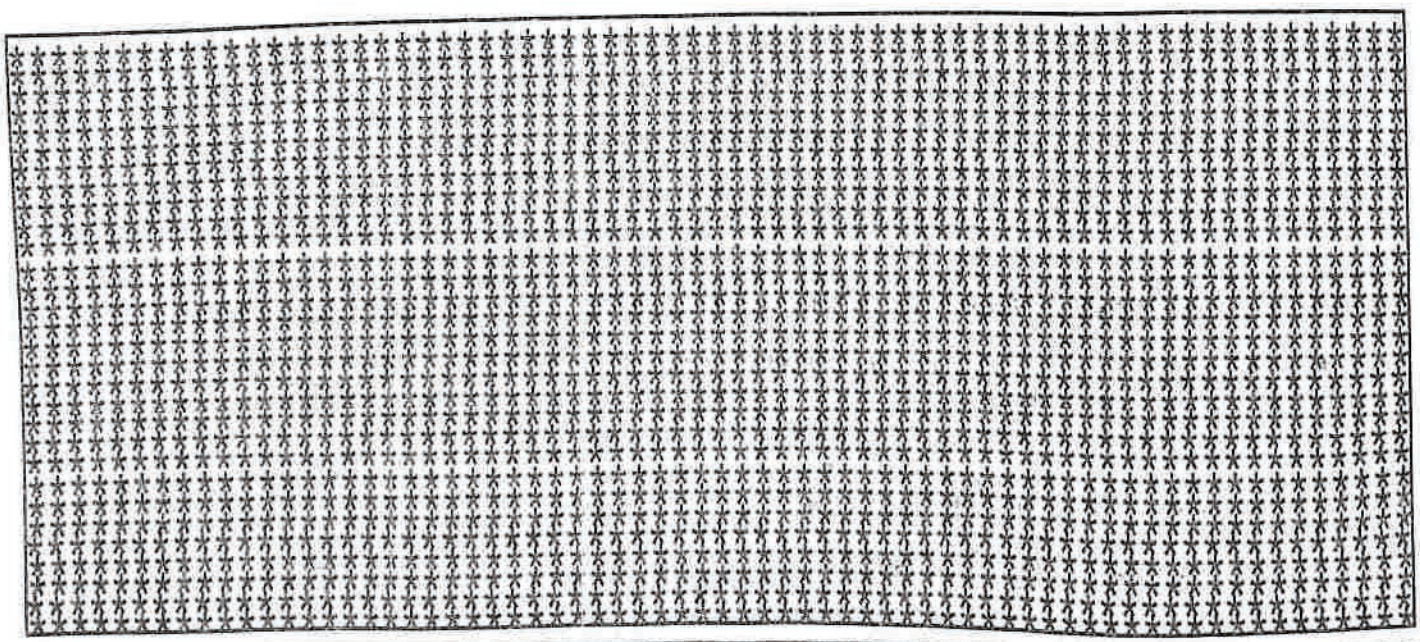

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ट पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोडकर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. भारतीय नारी तब और अब ।

2. शिक्षा के प्रचार-प्रसार से नारियाँ आत्मविश्वास से भर गई ।

3. आधुनिक नारी चाहे वो गाँव की हो, छोटे कस्बे की हो, शहर की हो या महानगर की हो, चाहे वे पढ़ीलिखी हो, चाहे गरीब हो या अमीर, आजादी की लड़ाई मे घर से बाहर निकल पड़ी थी ।

4. कविता मे जो आदमी सोया हुआ है उसे जगाने की बात की गई है।

5. आदमी को वक्त पर जगाना आवश्यक है क्योंकि यदि वह सोता रहेगा तो उसका अच्छा समय निकल जाएगा । सभी लोग उससे आगे निकल जाएगें ।

6. जो व्यक्ति बेसमय जागता है वह व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए घबरा कर भागता है जबकि क्षिप्र गति मे व्यक्ति सही समय पर जाग जाता है।

9. क्रिया :—
बाक्य मे जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना पाया जाए उसे 'क्रिया' कहते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कर्म के आधार पर क्रिया के 2 भेद होते हैं :-
(i) अकर्मक क्रिया ।
(ii) सकर्मक क्रिया ।

10. कारक :- करण कारक ।
काल :- सामान्य भूतकाल
वाच्य :- ~~भाव~~ वाच्य । कर्म

11. गजानन :- गज के जैसा है आनन जिसका (गणेश) - बहुव्रीहि समास
प्रस्तुत समास में कोई भी पद प्रधान नहीं है और समस्त पद के दोनों पद मिल कर अन्य अर्थ प्रकट कर रहे हैं।

12. (क) मुझे अभी जाना है।
(ख) मेरे पास मात्र पचास रुपये हैं।

13. (क) बहाने बनाना ।
(ख) वश में न रहना / बहुत क्रोध करना ।

14. प्रशासन की अयोग्यता पर धांधली / अयोग्य प्रशासन ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. प्रसंग :—

*

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'पद' शीर्षक पाठ से लिया गया है। ये पद सूरदास द्वारा रचित हैं। प्रथम बार ब्रज में आयी राधा को देखकर कृष्ण ने जो सवाल पूछे और राधा ने जो प्रत्युत्तर दिया उसी वार्तालाप का यहाँ सरस वर्णन किया गया है।

व्याख्या :—

*

प्रथम बार ब्रज में आयी राधा को देखकर कृष्ण ने पूछा — 'हे गोरी! तुम कौन हो व कहाँ रहती हो? तुम किसकी पुत्री हो? मैंने तुम्हें कभी ब्रज की गलियों में नहीं देखा है।' तब राधा ने प्रत्युत्तर में कहा - 'हम ब्रज की ओर क्यों आने लगी? हम तो अपनी दहलीज पर ही खेला करती हैं और सुना करती हैं कि यहाँ नंदराय जी का बेटा दही - मक्खन की चोरी करता रहता है।' तब कृष्ण ने कहा — 'हमने तुम्हारा क्या चुरा लिया है जो तुम हम पर चोरी का आरोप लगा रही हो। अब तुम हमारे साथ खेलने चलो, जोड़ीदार बनकर खेलो।' सूरदासजी वर्णन करते हैं कि रसिकों में शिरोमणि अर्थात् रसिकों में सर्वाधिक रसिक श्रीकृष्ण ने अपनी रसिक बातों से भोली- भाली राधा को उलझा दिया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :—
*
कृष्ण व राधा के प्रथम मिलन का सरस वर्णन किया गया है।
पद की गेयता प्रशस्य है।

16. प्रसंग :—
*
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'ईर्ष्या! तू न गई मेरे मन से' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। यह रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'अर्द्धनारीश्वर' पुस्तक से लिया गया है। प्रस्तुत पद्यांश में लेखक द्वारा ईर्ष्या से बचने के उपाय सुझाए गए हैं।

व्याख्या :—
*
लेखक ईर्ष्या से बचने के उपाय बताते हुए कहते हैं कि ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है अतः मानसिक अनुशासन अपनाकर ईर्ष्या से बचा जा सकता है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु है उसे फालतू व निरर्थक बातों के बारे में सोचना छोड़ देना चाहिए। साथ ही उसे इस बात का पता चलाना चाहिए कि किस वस्तु की कमी के कारण उसके मन में ईर्ष्या है और उसकी पूर्ति करने का रचनात्म

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपाय क्या हो सकता है जिस दिन उसके भीतर यह रचनात्मक कार्य करने की जिज्ञासा आ जाएगी उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

विशेष :—

* लेखक द्वारा सहज तरीके से ईर्ष्या से बचने के उपाय बताए गए हैं। गद्यांश की भाषा सुंदर है।

17. "प्रभो" कविता जयशंकर प्रसाद के स्फुट कविताओं के संग्रह 'कानन कुसुम' से ली गई है। कवि को प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर का अनंत प्रसार दृष्टिगत होता है। चन्द्रमा की विशाल किरणें फैलकर ईश्वरीय प्रकाश को व्यक्त कर रही है। ईश्वर अनादि है उसकी माया अनंत है यह इस संसार लीला से ज्ञात हो जाता है क्योंकि संसार की लीला की भी यही स्थिति है। ईश्वर की दया का प्रसार सागर में दिखाई देता है और इसी से उसका स्तुतिगान भी होता है। ईश्वर की मधुर मुस्कान चाँदनी में तथा हँसने का स्वर नादियों के कलकल निनाद में सुनाई देता है। रात्रि में आकाश में असंख्य तारे जगमगाते रहते हैं उनसे ईश्वर का यह संसार रूपी मंदिर अनोखा लगता है। ईश्वर ही संसार रूपी कमलिनी को विकसित

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

करने वाला सूर्य है। वही इस सृष्टि का रचियता, पालक व रक्षक है। ईश्वर की कृपा से ही सभी के मनोरथ पूर्ण होते हैं। संसार के सभी लोग यही कहते हैं कि ईश्वर की दया से हमारे मनोरथ पूर्ण हुए है। मुझे पूरी आशा व विश्वास है कि ईश्वर मेरे मनोरथों को अवश्य पूर्ण करेगा।

18. मध्यकाल भारतीय सनातनता का एक उज्ज्वल अध्याय है। संत-कवियों ने मानवता के लिए सहज-सामान्य पथ की वकालत की। लोक संत पीपा भी निर्गुण भक्ति की दृष्टि से विशिष्ट है। ये हिंसा के विरोधी थे तथा मांस भक्षण की सर्वथा निंदा करते थे उन्होंने संपूर्ण राजवैभव त्यागकर निर्गुण भक्ति का मार्ग अपना लिया। संत पीपा रामानंद के शिष्य थे। ये आत्मा व परमात्मा को एक मानते थे। इन्होंने भक्ति-भावना द्वारा समाज के उपेक्षित व निम्न वर्ग के हृदय में आत्मविश्वास, दृढ निश्चय आदि की भावना भर दी। ये निम्न वर्ग के हितैषी थे। ये समाज में प्रचलित पाखण्ड व बाह्याडंबरों का विरोध करते थे। इनकी भ में सरलता व सम्प्रेष्यता थी। इनकी वाणी राजस्थान के जनमानस की सामाहिक स्मृ का हिस्सा रही है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

संत पीपा का जीवन प्रारंभ में भले ही राज वैभव से संपन्न रहा परंतु बाद में ये निर्गुण भक्ति करने लगे। ये इस शरीर को मिथ्या मानकर ज्ञान चेतना का उपदेश देने लगे।

19. कवि कहता है कि हे राजिया! कोयल की वाणी मधुर लगती है वह मन को प्रसन्नता देती है परंतु कौए का स्वर कर्कश व कड़वा लगता है। इसी प्रकार समाज में भी मधुर वाणी अच्छी लगती है। रसना के गुण अर्थात् वाणी के सदव्यवहार से ही कोई व्यक्ति मित्र तो कोई शत्रु बन जाता है। आपसी प्रेम व्यवहार में भी वाणी का विशेष महत्व है। उपर्युक्त सोरठे से कवि हमें यह संदेश देना चाहता है कि हमें हमेशा मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए।

20. "मातृवन्दना" कविता में कवि निराला मातृभूमि पर अपने श्रम से अर्जित सभी फलों को समर्पित करना चाहता है। वह अपने जीवन के समस्त स्वार्थों को मातृभूमि के चरणों में समर्पित करना चाहता है। वह तन-मन-धन के साथ ही अपना सर्वस्व समर्पित करना चाहता है। इस प्रकार कवि त्याग-बलिदान से मातृभूमि की वन्दना करना चाहता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

21. "कन्यादान" कविता की वर्तमान में बहुत प्रासंगिकता है। इस कविता में माँ ने बेटी को जो सीख दी है वह आज के युग के सर्वथा अनुकूल है। वर्तमान में ससुराल पक्ष के लोग बहुओं पर अत्याचार करते है, उन पर काम करने का दबाव बनाते है, उसे प्रताडित करते है। इस कविता में माँ ने बेटी को शोषण से बचाने के लिए जो शिक्षाएँ दी है वे आज के युग के लिए बहुत प्रासंगिक है इस छोटी सी कविता में ऋतुराज की स्त्री जीवन के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त हुई है।

22 देवालय बनाने का विचार आने पर लेखक ने सोचा की इन दिनो पाश्चात्य सभ्यता का जो प्रसार हो रहा है यदि आगे भी यही स्थिति रही तो मंदिर में दर्शनार्थ कोई नही आएगा, कोई उस ओर देखेगा भी नही। अंग्रेजी शिक्षा - सभ्यता के प्रसार से देवाल-यो की घोर उपेक्षा होगी। इस तरह देवालय बनाने से बडी कोई मूर्खता नही होगी।

23. "आखिरी चट्टान" यात्रावृत में लेखक मोहन राकेश ने कन्याकुमारी व उसके समीपवर्ती

सागर तट का मनोहारी वर्णन किया है। वस्तुतः भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है। यहाँ उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत का सौन्दर्य है तो मध्य में हरे भरे खेतों, वनों, नादियों का सौन्दर्य मन को मुग्ध कर देता है। इसी प्रकार यहाँ दक्षिण में कन्याकुमारी का सौन्दर्य है। यह भारत के दक्षिणी भाग में शोभित तीर्थ-स्थली है।

इस प्रकार भारत में प्राकृतिक दृश्य बहुत मनोरम हैं और यह प्रकृति का खूबसूरत उपहार है।

24. संत दादू ने अपने शिष्यों को परनिंदा नहीं करने का उपदेश दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जिसके हृदय में राम का निवास नहीं है वही दूसरों की निंदा करता है। उन्होंने सभी से मानवीय व्यवहार करने की शिक्षा दी। उन्होंने निःशंक भाव से पवित्र आचरण करने का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि किसी को भी मन में दोष नहीं अपनाना चाहिए।

इस प्रकार संत दादू ने अपने शिष्यों को सभी से उचित व मानवीय व्यवहार करने की शिक्षा दी।

25. दादू पंथ के पंचतीर्थ :— सांभर, आमेर, नरैणा, भैराणा, कल्याणपुर।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	26.	दिन-रात हरि सुमिरन में लगे रहने से संत पीपा का मन राजकाज से उचट गया।
	27.	श्याम ने किसी गोपी या राधा को झूला झूलने के लिए आमंत्रित किया।
	28.	ग्रीष्म ऋतु के प्रखर ताप से खेतों की मिट्टी पपराई हुई थी।
	29.	(i) महाकवि निराला :—

हिन्दी साहित्य में 'निराला' उपनाम से प्रसिद्ध सूर्यकान्त त्रिपाठी का जन्म सन् 1896 में वसंत पंचमी के दिन बंगाल के मेदिनीपुर में हुआ। तीन वर्ष की अवस्था में माँ व युवावस्था तक पहुँचते-पहुँचते पिताजी का देहांत हो गया। अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने इन्हें भीतर तक झकझोर दिया। इनका पारिवारिक जीवन संघर्षमय रहा एवं साथ ही साहित्यिक जीवन में भी कड़ा संघर्ष करना पड़ा। ये छायावाद के प्रमुख कवि थे।

कृतियाँ :— अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, रानी और कानी, राम की शक्ति पूजा, अर्चना।

शोकगीत :— सरोज स्मृति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) देव :—

रीतिकाल के अग्रणी कवि देव का जन्म संवत् 1730 में उत्तर प्रदेश के इटावा में हुआ। इनका पूरा नाम देवदत्त द्विवेदी था। कुछ विद्वान इनके गुरु हितहरिवंश को मानते है। इनका रचनात्मक कार्य विशाल है क्योंकि इन्हे अनेक राजाओं के आश्रय में रहना पड़ा। इनकी रचनाओं की संख्या 52 मानी जाती है परंतु प्रमुख समालोचकों ने इनकी पन्द्रह कृतियाँ ही प्रमाणिक मानी है। इन्होंने तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों में हिन्दी साहित्य को अमूल्य रत्न प्रदान किए।

कृतियाँ :—

भाव विलास, भवानीविलास, कुशलविलास, अष्टयाम, देवचरित, देवमाया प्रपंच, रस विलास, सुखसागर तरंग।

देव ने भी केशव की भाँति कर्म व आचार्य कर्म दोनों का निर्वाह किया। वि. सं. 1824 में इनकी मृत्यु हो गई।

30. (i) एक ही रास्ता संकेत।
(ii) साईकिल पर प्रतिबंध।
(iii) हॉर्न पर प्रतिबंध।
(iv) वाहन की चौड़ाई सीमा।

8. पत्रांक 24/10/32 दिनांक 16/3/19

प्रेषक :- दवा विक्रेता,
विनय फार्मास्यूटिकल वर्क्स,
चौंमू

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सरोज फार्मा कंपनी,
मुंबई

प्रिय महोदय,

जैसा कि आप जानते हैं कि हम अपनी सभी दवाएं आपकी कंपनी से ही मंगाते हैं। इस बार भी हमें कुछ दवाएं मंगवानी हैं कृपया निम्नलिखित दवाएं उचित कमीशन काटकर व उचित पैकिंग द्वारा भिजवाने की कृपा करें—

पैथेडीन	-	10 पैकेट
ब्यूप्रीनोर्फिन	-	15 पैकेट
नाइट्राजीपाम	-	20 पैकेट
डाईजीपाम	-	10 पैकेट

कृपया, ये दवाएं स्पीड पोस्ट द्वारा भिजवाएं व बिल की दो प्रामाणिक प्रतियां अवश्य संलग्न करें।

भवदीय,
(हस्ताक्षर ---)
हेमांग,
दवा विक्रेता, चौंमू

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

7. आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या

(i) प्रस्तावना - आतंकवाद की परिभाषा :-

आतंक का अर्थ है : भय का वातावरण बनाना। वर्तमान में आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या बन गया है। आतंकवादी मानवता के दुश्मन होते हैं वे सभी के साथ बड़ा क्रूर व नृशंस आचरण करते हैं। उनके हृदय में मानवता के प्रति कोई विशेष लगाव नहीं होता है। वे नरसंहार को देखकर भी विचलित नहीं होते हैं। वर्तमान में तो आतंकवाद की स्थिति बहुत खराब है एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को आतंकवाद के जरिए अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुँचाते हैं।

आतंकवाद सर्वप्रथम इजरायल में उत्पन्न हुआ और वर्तमान में सभी देशों में आतंकवादी संगठन हैं जिनमें प्रमुख हैं :— हिजबुल आतंकी संगठन, लिट्टे (श्रीलंका), लश्कर-ए-तोयबा, जैश-ए-मोहम्मद, आईएसआई एसआई (ISISI - पाकिस्तान)। इसके अलावा अन्य भी कई आतंकी संगठन हैं इसके अलावा कुछ और संगठन भी हैं जो गुप्त रूप से आतंकवादियों की सहायता करते हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ सरकारें भी आतंकवादियों को संरक्षण देती हैं और उनको हथियार उपलब्ध कराती हैं जिससे आतंकवादियों के हौसले बढ़ जाते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) आतंकवाद के उद्देश्य :—

आतंकवादियो का उद्देश्य लोगो मे भय का वातावरण उत्पन्न करना होता है। वे कभी सार्वजनिक बस स्टैंडो, रेलवे स्टेशनो आदि पर हमले करते है तो कभी सरकारी दफतरो आदि को अपना निशाना बनाते है। इससे अनेक निर्दोष लोग मारे जाते है व राष्ट्र की सम्पदा को भी अपार हानि होती है। भारत मे आतंकवाद पडोसी देश पाकिस्तान द्वारा फैलाया जाता है। आतंकवादियो के अनेक गुप्त संगठन जम्मू-कश्मीर (पाक आधिकृत) मे है जहा से आए दिन सीजफायर का उल्लंघन होता है और अनेक जवान शहीद हो जाते है। भारतीय सेना के हाथो भी अनेक आतंकी मार गिराए जाते है।

आतंकवाद का ताजा उदाहरण हमारे सम्मुख है जब 14 फरवरी 2019 को पाकिस्तान ने सीजफायर का उल्लंघन करते हुए 'पुलवामा' पर आतंकी हमला किया। फलस्वरूप भारतीय सेना के 42 जवान शहीद हो गए। इसके बाद भारत ने भी एयर स्ट्राइक द्वारा पाकिस्तान के चकोटी, मुजफ्फरपुर व बालाकोट मे संचालित आतंकी संगठन पर हमला किया जिससे 300 से भी अधिक आतंकी मारे गए। इसके अलावा हमारे देश मे नक्सलवादियो व उग्रवादियो द्वारा भी भय का वातावरण बना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जा रहा है। अतः आतंकवाद से दो राष्ट्रो के बीच मतभेद बढते हैं और इससे कई निर्दोष लोगो को सजा भुगतनी पडती है।

(iii) आतंकवाद को नियंत्रित करने के उपाय :—

चूँकि आतंकवाद एक अतिविषम परिस्थिति है और इससे एक राष्ट्र को बहुत हानि होती है अतः इसका नियंत्रण किया जाना आवश्यक है। आतंकवाद के नियंत्रण के लिए राष्ट्रो के बीच द्वेष का अंत होना चाहिए एवं उनमे मैत्री संबंध स्थापित होने चाहिए। आतंकवाद को पोषित करने वाले संगठनो को समाप्त किया जाए। यदि कोई सरकार भी आतंकवाद का साथ देती है तो ऐसी सरकार का अंत किया जाए।
आतंकवादी संगठनो को नष्ट किया जाए तो भी आतंकवाद पर नियंत्रण किया जा सकता है।
अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर आतंकवाद को नियंत्रित करने हेतु सरल नियम बनाए जाए व सभी राष्ट्रो द्वारा उनका सख्ती से पालन किया जावे साथ ही यदि कोई राष्ट्र आतंकवाद समाप्त नही करे तो उस राष्ट्र के विरुद्ध कार्यवाही की जाए। शांतिपूर्ण सह-आस्तित्व जैसी नीतियो को महत्व दिया जाए। यदि उपर्युक्त उपाय किए जाए तो आतंकवाद को काफी स्तर तक नियंत्रि किया जा सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक राष्ट्र द्वारा अपने देश की शासन व्यवस्था में सुधार किया जाए। नक्सलवादियों, उग्रवादियों व आतंकवादियों को या तो देश से बाहर निकाला जाए या उनके खिलाफ उचित कानून बनाए जाए। यदि विश्व का प्रत्येक राष्ट्र आतंकवाद को समाप्त करने का निश्चय कर ले तो निश्चित ही आतंकवाद पर रोक लग सकती है।

(iv) उपसंहार :—

यद्यपि आतंकवाद को नियंत्रित करना एक बड़ी चुनौती है परंतु इसे नियंत्रित करना असंभव तो नहीं है। आतंकवाद मानवता के अस्तित्व के लिए बड़ी चुनौती है। प्रत्येक राष्ट्र आतंकवाद की समस्या से ग्रस्त है।
यदि आतंकवाद को नियंत्रित किया जाए तो निश्चित ही संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व कार्य को सफलता मिलेगी व राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित होने से संपूर्ण विश्व एक परिवार ("वसुधैव कुटुम्बकं") के भारतीय आदर्श को प्राप्त किया जा सकता है।

(समाप्त)